अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन ! सब कर्मों के फल के त्याग को ज्ञानीजन त्याग कहते हैं और वही विद्वानों द्वारा संन्यास समझा जाता है।।२।।

तात्पर्य

सकाम कर्मों को स्वरूप से त्याग देना आवश्यक है; भगवद्गीता का ऐसा स्पष्ट आदेश है। परन्तु अध्यात्म ज्ञान में उन्नति के अनुकूल नित्यकर्मों को नहीं त्यागना चाहिए। अगले श्लोक से यह पूर्णरूप में स्पष्ट हो जायगा। वैदिक शास्त्रों में विशेष-विशेष प्रयोजनों के लिए नाना यज्ञों के विधान हैं। सत्पुत्र अथवा स्वर्ग आदि की प्राप्ति के लिए अलग-अलग यज्ञ हैं। ऐसे सब सकाम यज्ञों को त्याग देना चाहिए। परन्तु अन्तःकरण की शुद्धि अथवा आत्मविद्या की उन्नति के लिए किए जाने वाले यज्ञों को नहीं त्यागना चाहिए।

त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे।।३।।

त्याज्यम्=त्यागने के योग्य हैं; **दोषवत्**=दोषयुक्त होने से; **इति**=इस प्रकार; **एके**=एक वर्ग; **कर्म**=सम्पूर्ण कर्म; **प्राहुः**=कहते हैं; **मनीषिणः**=विचारशील पुरुष; **यज्ञदानतपःकर्म**=यज्ञ, दान, तप, आदि कर्म; **न त्याज्यम्**=कभी नहीं त्यागने चाहिए; **इति**=ऐसे; **च**=भी; **अपरे**=दूसरे विद्वान्।

अनुवाद

विद्वानों के एक वर्ग के मत में तो दोषयुक्त होने के कारण सभी कर्म त्यागने के योग्य हैं; परन्तु दूसरे कहते हैं कि यज्ञ, तप और दान कर्म को कभी नहीं त्यागना चाहिए।।।३।।

तात्पर्य

वैदिक शास्त्रों में ऐसे अनेक कर्मों का उल्लेख है, जो मतभेद के विषय हैं। उदाहरण के लिए, कुछ के अनुसार यज्ञ में पशु-हिंसा की जा सकती है, जबकि दूसरों का कहना है कि पशु-हिंसा पूर्ण रूप से निषिद्ध है। वैदिक शास्त्रों में एक प्रकार के यज्ञ में पशु-हिंसा का उल्लेख तो है, परन्तु ऐसे पशु को मरा नहीं समझा जाता। वृद्ध पशु को नूतन जीवन देने के लिए ही यज्ञ में उसकी बली दी जाती है। इस प्रकार कभी उसे नए पशु-शरीर की प्राप्ति होती है, तो कभी-कभी सीधे मानव शरीर मिल जाता है। परन्तु इस सम्बन्ध में ऋषियों में मतभेद है। कुछ कहते हैं कि पशु-हिंसा से सदा बचना चाहिए, तो कुछ दूसरों के मत में एक विशिष्ट यज्ञ में उससे लाभ होता है। इन सब यज्ञ-क्रिया विषयक विवादों का अब श्रीभगवान् स्वयं समाधान करते हैं।

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः।।४।।

निश्चयम्=निश्चय को; **शृणु**=सुन; **मे**=मेरे; **तत्र**=उस; **त्यागे**=त्याग के विषय